श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ मण्डल पूजा विधान

जैन इतिहास में एक अद्‌भुत नजारा- १ नहीं २ नहीं पूरे २४ प्रत्र्यकल्याणक, एक साथ २४ रथ, २४ सौधर्म इन्द्र, २४माता-पिता, २४कुबेर, २४ प्रतिष्ठाचार्य, २४ पण्डालों, में हजारों इन्द्र इन्द्राणियों द्वारा- **परम पूज्य गणाधिपति गणधराचार्य श्री १०८ कुन्थुसागर जी महाराज** की पावन प्रेरणा से सह्याद्री की पर्वतीय प्राकृतिक श्रंखला वाली ३ . ५ कि. मी. की अर्ध चन्द्राकार पहाडी पर निर्मित २१-२१ फुट की भव्य उत्तुंग मनोज्ञ प्रतिमाओं की २४ टोंकों पर स्थापना पूर्वक **परम पूज्य ज्ञानयोगी प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य श्री १०८ देवनन्दि जी. महाराज** के कुशल मार्गदर्शन में शताधिक साधुओं के सानिध्य में ११ मई से १८ मई २०१३ तक राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक के पावन अवसर आप सभी आमन्त्रित हैं । आवास व भोजन की सुव्यवस्थित व्यवस्था के साथ धर्मार्जन हेतु आप भी इन्द्र इन्द्राणी बनकर कलश आरक्षण कराकर पुण्यार्जन करें ।

संपर्क सूत्रः नीलम अजमेरा (महामन्त्री)- ९४२२०७०३१९, ओम पाटनी (सचिव) ९३७२०५३६७०, बाबुभाई गांधी (कोषाध्यक्ष)- ९४२२०६८८२२.

Bank ~ IDBI Bank Ichalkaranji.
A/c No - 0467104000093842

।। श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय नमः ।।

श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ मण्डल पूजा विधान

।। संकलन - लेखन ।।

गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागर

मुद्रण- शकुंतला ऑफसेट प्रिंटरी, कोल्हापूर

प्रति- ३०००

प्रकाशन-सन २००१२

।। प्रकाशक ।।

कुंथुदेव ग्रंथालय

कुंथुगिरी, रामलिंग रोड, पोस्ट : आळते, तालुका : हातक[illegible],

जिल्हा : कोल्हापूर. (महा.) / फोन ०२३[illegible] २४[illegible]

मो. ९९२२४१५१०८/९९२२२४५२११, [illegible]

जाप्य के योग्य मन्त्र

(१)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं कलिकुंडदंड स्वामिन्नतुलबलवीर्यपराक्रम दंडा धीप स्क्रां स्क्रीं स्क्रूं स्क्रौं स्क्रः मम् आत्मविद्यां रक्ष२ परविद्यां छींद२ भिंद२ हूं फट् स्वाहा ।

(२)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अर्हं कलिकुंडदंड स्वामिन्नतुलबलवीर्य पराक्रमाय मम् दाह ज्वराद्युप शांति कुरु२ परविद्यां छिंद२ भिंद२ श्रीं ह्रीं ऐं हूं फट् स्वाहा ।

(३)

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतिसहिताय ठभ्ल्व्र्यूं क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मैं क्ष्मौं क्ष्मः कलिकुंडदंडस्वाानिन्नतुल बलवीर्यपराक्रम मम् शाकिन्यादि भयोपशमं करुं२ आत्मविद्यां रक्ष२ परविद्यां छिंद२ भिंद२ हूं फट् स्वाहा ।

इन तीनों मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र की १२५ माला जप करके विधान करें फिर दशांस आहुति देवें । मन्त्र सिद्ध हो जायगा ।

इस विधान को सकलीकरण व आद्य सब विधि करके पंचामृताभिषेक करें, कलिकुंड यंत्र अवश्य साथ में रखें जिनेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के साथ, फिर विधान मण्डल पूजा करें, अन्त में हवन कर समाप्त करें ।

श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ मण्डल पूजा विधान

ग. आ. कुन्थुसागर रचित

मंगलाचरण

वन्दों पार्श्व जिनेश को, मन में बहु हर्षाय ।
पार्श्वनाथ भगवान की, पूजा लिखुं बनाय ॥ १ ॥

अपरनाम कलिकुण्ड है विधि विधान से युक्त ।
भविजन मिल पूजा करो, यो शान्ति से युक्त ॥ २ ॥

ह्रूं कार से युक्त कर, मध्य लिखो स्वमंत्र ।
वलय एक ऊपर करो, पद्मदल चौषट् ॥ ३ ॥

एक वलय और करो, दो दल लिखो उस मांय ।
यक्ष और यक्षी लिखो, उस ही दल के मांय ॥ ४ ॥

एक वलय और लिखो, ग्रष्ट दल कमल बनाय ।
आठ पिंडाक्षर लिखो, सुन्दर कमल बनाय ॥ ५ ॥

ग्रष्ट मातृका देवी का, उस पर कमल बनाय ।
ग्रष्ट दल कमल ग्रौर कर, लिखो जयादि नाम ॥ ६ ॥

इस विध मण्डल बनाय कर, पूजा करो हर्षाय ।
दु:ख दारिद्र सभी नशे, संकट दूर पलाय ॥ ७ ॥

मन में जो इच्छा करे, होती इच्छा पूर ।
भूत प्रेत व्यतर भगे, बाधा हो सब दूर ॥ ८ ॥

मण्डल रचना

नानावधि के वर्ण से, मण्डल करे बनाय ।
वेदी को सज्जित करे घन्टा तोरण बंधाय ॥ ९ ॥

अशोकादि वृक्ष के पत्ते, देओ बंधाय ।
कदली के खंभे करो, मण्डल देओ संजाय ॥ १० ॥

इस विध मण्डल बनायकर, प्रथम करो अभिषेक ।
सकली करण विधि करो, करो विधि एकेक ॥ ११ ॥

मंडप शुद्धि करके भविजन, आद्य विधि सब करलो रे।
सब विधि विधान पूर्वक, इसकी पूजा करलो रे ॥ १२ ॥

पार्श्वनाथ कलिकुण्ड का, यह विधान हे सार ।
पुष्पांजलि क्षेपन करो, पुजक सब नर नार ॥ १३ ॥

पुष्पांजलि क्षेपनं

काशी देश बनारस नगरी, विश्वसेन तुम जन्म लियो ।
वामा माता के हो प्यारे, घर-घर मंगलाचार कियो ।
इन्द्रादिक देवों ने आकर, पंचकल्याण उत्सव कियो ।
हम सब मिल प्रभु भक्ति भाव से, तुमको यहां स्थापन हे कियो ॥ १४ ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अत्रावतर अवतर
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अत्रमम् सन्निहितो भव२ वषट्

सूवर्ण झारी भरकर लाया प्रभु, तुम ढींग देखो आज ।
प्रासुक जल से पूजा करने, तुम चरणों में आया आज ।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, जल से पूजा करलों आज ।
जन्म मरण अरू जरारोग का, नाश सभी मिल करलो आज ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्व भय, सर्व शाकिन्यादि भय निर्वाणार्थ व जन्म जरा, मृत्यु रोग निर्वाणार्थ जलं निर्वपामिति स्वाहा । ॥ जलं ॥

मलयागिर का चन्दन घिसकर, तुम चरणों में आया आज ।
शुद्ध सुवासित, जन मन मोहन, गंध को लेकर आया आज ।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, गंध से पूजा करलो आज ।
देहताप विनाशंन हेतु, सब मिल पूजा करलो आज ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थ व देहताप विनाशनार्थ चन्दनं निर्वपामिति स्वाहा ।

॥ चन्दनं ॥

अखण्ड अक्षत लेकर आया, प्रभु चरणों में देखो आज ।
खंड खंड सब कर्म का करने, तुम चरणों में आया आज ।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की करो, अक्षत से पूजा आज ।
अक्षय पद अतिशीघ्र प्राप्त को, सब मिल पूजा करलो आज ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थ व अक्षयपद प्राप्त्यार्थ अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा ।

॥ अक्षतं ॥

फूल चमेली बकुल मोगरा, नाना विध लाया आज ।
काम बाण सब नाश करने को, तुम चरणों में आया आज ।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, फूल से पूजा करलो आज ।
घोर गुण ब्रह्मचारी बनने, सब मिल पूजा करलो आज ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थ व कामबाण विनाशनार्थ पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।

॥ पुष्पं ॥

नाना विध पकवान बनाया, लाडू पेडा घेवर आज ।
मिष्ट मनोहर सुवर्ण थाल में, भरकर लाया देखो आज ।
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, चरु से पूजा करलो आज ।
क्षुधा वेदनि नाश करन को, सब मिल पूजा करलो आज ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थ व क्षुधा वेदनी नाशार्थ नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

॥ नैवेद्यं ॥

कंचन से ये दीप सजाया, उसमें घृत भर दीना आज ।
दीप जलाकर प्रभु चरणों में, मैंने रख दीना हे आज ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, दीप से पूजा करलो आज ।
मोहान्धकार का नाश करन्नको, सब मिल पूजा करलो आज ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थ व मोहान्धकार नाशार्थ दीपं निर्वपामिति स्वाहा ।

॥ दीपं ॥

अगर तगर सुवासित चन्दन, आदि कूट लीने मैं आज ।
शुद्ध अग्नि में खेय खेय कर, वासित कीन्हा मन्दिर आज ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, धूप से पूजा करलो आज ।
अष्ट कर्म के दहन करन को, सब मिल पूजा करलो आज ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थ व अष्ट कर्म दहनायर्थ धूपं निर्वपामिति स्वाहा ।

॥ धूपं ॥

केला, दाडिम, आम आदि सब प्रासुक फल लीन्हे मैं आज ।
मिष्ट मनोहर पक्व पक्व ले, सुवर्ण थाल भर लीन्हे आज ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, फल से पूजा करलो आज ।
मोक्ष लक्ष्मी के सुख पाने, सब मिल पूजा करलो आज ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणर्थ व मोक्षफलं प्राप्यर्थ फलं निर्वपामिति स्वाहा ।

॥ फलं ॥

जल चन्दन अक्षतादि ले, अष्ट द्रव्य सजाया आज ।
सुवर्ण थाल में रख कर मैंने, मन को शुद्ध कीन्हा है आज ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु की, वसुद्रव्य से पूजा करलो आज ।
अनर्घ्य पद के प्राप्ति हेतु, सब मिल पूजा करलो आज ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणर्य व अनर्घ्य पद प्राप्यर्थ अर्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

॥ अर्घ ॥

सुवर्ण झारी से प्रभु जल की धारा देत ।
जग की शान्ति के लिये शान्ति धारा देत ॥ २४ ॥

॥ शान्ति धारा ॥

पुष्पों को भर अंजुली में दीन्हा चरण चढ़ाय ।
कामबाण नश जाने को पुष्पाञ्जलि चढ़ाय ॥ २५ ॥

॥ परि पुष्पाञ्जली क्षिपेत् ॥

मन्त्र २७ बार जपें

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय मम् सर्व विघ्नाय शान्तिं कुरु२ नमः स्वाहा ।

॥ जयमाला ॥

कलिकुण्ड पार्श्वनाथ की जयमाला लिखुं बनाय ।
सब विध सुख की प्राप्ति हो, मन में आनन्द छाय ॥ २६ ॥

जय पार्श्व प्रभु तुम हो सहाय, भविजन को सुख देते महान ।
जय गर्भ जन्म तप, ज्ञान धार, वसु कर्म नाश तुम मोक्ष धार ॥

जय पार्श्व जिनेन्द्र दया निधान, भवि कानन नाशन हार जान ।
काशी में जन्मे तुम महान्, हरि आप आय उत्सव जु कीन ॥

मेरु पर लेकर देव जाय, इन्द्रादिक ने मिल करी सहाय ।
पञ्च कल्याणक को धारो महान्, तुम धर्म तीर्थ नायक महान् ॥

कुछ निमित्त पाय तुम भये उदास, लोकान्तिक ने कीन्हा प्रयास ।
प्रभु तुमने दीक्षा धार लीन, अति कठिन घोर तप में जुलीन ।
प्रभु तुमने केवल लक्ष्मी पाय, भविजन को तुम बोधन कराय ॥

तुम वाणी सुन भविजन अनेक, भवदधि से उत्तरे भवि अनेक ।
तुम अष्ट कर्म जु चूर कीन्ह, क्षण में तुमने सुख लिन्ह लिन्ह ॥

हम तुम चरणों में आय आय, करे भक्तिभाव आनन्द छाय ।
हम सेवक तुम चरणों में आय, हमरे दुःख मेटो तुम सहाय ॥

तुम तीन लोक अधिपति कहाय, हम पामर तुम शिवपति कहाय ।
'कुन्थु' करता तुमको पुकार, शिवपुरी का दे दो अधिकार ॥

चरण पड़ूँ वन्दन करूँ, तुम चरणों में आज ।
मोक्ष लक्ष्मी को पाय कर, सुख पाऊँ मैं आज ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिने, चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, सर्वभय, व सर्वशाकिन्यादि भय निर्वाणार्थं व जयमाला अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

कमल केतकी और गुलाब को अंजुली भर चढ़ाय दिया ।
पुष्पाञ्जलि से पुष्प चढ़ाय कर, मन में मैंने शान्ति लिया ॥

मण्डलोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

मण्डल पर अर्घ्य चढ़ाना

जल, चन्दन, अक्षत, पुष्पादि लेकर आया मैं प्रभुवर ।
अष्टद्रव्य से थाल सजाकर, अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं प्रभुवर ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने घाति कर्म को नाश किया ।
कामदेव सम देह प्राप्त कर, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय काम देव सम सुन्दर शरीर सहिताय जलादि अर्घं ॥ १ ॥

जल चन्दनादि वसु द्रव्य सजाकर, लेकर आया हूं प्रभुवर ।
तुम चरणों में अर्घ चढ़ाकर, मुझ को शान्ति मिले प्रभुवर ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने घाति कर्म का नाश किया ।
अतिसुवासित देह प्राप्त कर, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सुगन्ध शरीर अतिशय प्राप्ताय जलादि अर्घं ॥ २ ॥

पसेव रहित शरीर को पाकर, तुमने अतिशय प्रकट किया ।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने घाति कर्म को नाश किया ।
पसेव रहित देह प्राप्तकर, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय पसेव रहित शरीर प्राप्ताय जलादि अर्घं ॥ ३ ॥

मल मूत्रों से रहित देह है, दिव्य देह को प्राप्त किया ।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया ।
कमल दिव्य देह को पाकर, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय मलमूत्र रहित देह प्राप्ताय जलादि अर्घं ॥ ४ ॥

हित मित प्रिय वचन बोलकर, सब के मन को लुभाय दिया ।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया ।
हित मित प्रिय वचन बोलकर, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय हित मित प्रिय वचन प्राप्ताय जलादि अर्घ ॥ ५ ॥

अप्रमाण शक्ति के धारक, सब शक्ति को धार लिया ।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्ध दिया ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया ।
अतुल बल शक्ति को धारकर, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अतुल बल शक्ति सहिताय जलादि अर्घ ॥ ६ ॥

श्वेत रक्त है तव शरीर में, सब जीवों को प्रेम दिया ।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया ।
वात्सल्यता के तुम प्रतीक हो, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय शुक्ल रक्त शरीर सहिताय जलादि अर्घ ॥ ७ ॥

एक हजार आठ शुभ लक्षण, तुमने देखो धार लिया ।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने घाति कर्म को नाश किया ।
सहस्त्र अष्ट लक्षण का धारो, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अष्टोत्तर सहस्त्र शुभ लक्षण सहिताय जलादि अर्घ ॥ ८ ॥

सम चतुरस्त्र संस्थान को धारा, जग का तुमने हित किया ।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया ।
सम चतुरस्त्र शरीर को पाकर, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सम चतुरस्त्र शरीर सहिताय जलादि अर्घ ॥ ९ ॥

वज्र सरीखा देह तुम्हारा, तुमने जग उपकार किया ।
इसीलिये चरणों में आकर, हमने तुमको अर्घ दिया ॥
कलिकुण्ड श्री पार्श्वप्रभु ने, घाति कर्म को नाश किया ।
वज्र वृषभ सहन को पाकर, तुमने सबको शान्ति दिया ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय वज्र वृषभ नाराच संहनन सहिताय जलादि अर्घ ॥ १० ॥

वसु विध सजि हिम थार अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
योजन शत एक में सुभीक्ष, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय योजन शत एक में सुभिक्षाय जलादि अर्घ ॥ ११ ॥

वसु विध सजि हिम थार अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
आकाश गमन से युक्त, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय आकाश गमन आतिशय सहिताय जलादि अर्घ ॥ १२ ॥

वसु विध सजि हिम थार अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
चहुमुख दिखते हैं पूर्ण, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय चहूं मुख अतिशय युक्ताय जलादि अर्घ ॥ १३ ॥

वसु विध सजि हिम थार अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
अहिंसा धर्म से युक्त, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अहिंसा धर्म युक्ताय जलादि अर्घ ॥ १४ ॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
उपसर्ग रहित है आप, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय स्वपर उपसर्ग रहिताय जलादि अर्घ ॥ १५ ॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
नहीं करते कवलाहार, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय कवलाहार रहिताय जलादि अर्घ ॥ १६ ॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
सर्व विद्या से हो युक्त, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व विद्या अधिश्वराय जलादि अर्घ ॥ १७ ॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
सर्व रोगादिक से रहित, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व रोग शोक रहित नख केश वृद्धि रहिताय जलादि अर्घ ॥ १८ ॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
प्रतिछाया रहित शरीर, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय प्रतिछाया रहित शरीराय जलादि अर्घ ॥ १९ ॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
नेत्रादि हलन से रहित, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय नेत्रादि भौं हलन रहिताय जलादि अर्घ ॥ २० ॥

वसु विध सजि हिम थार, अर्घ बनावत हैं ।
वसु कर्म अनादि संजोग, ताहि नशावत हैं ॥
अनक्षर भाषा सहित, घाति नशावत हैं ।
यह अतिशय तुमको प्राप्त, मोह नशावत हैं ॥ २१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनक्षर भाषा सहिताय जलादि अर्घ ॥ २१ ॥

दोहा

करते सबसे मैत्री तुम, सबके मित्र हो आप ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन तुमको आज ॥ २२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय परस्पर मैत्री भाव सहिताय जलादि अर्घ ॥ २२ ॥

सर्व दिशा निर्मल बनी, मल नहीं कहीं अवशेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व दिशा निर्मलता सहिताय जलादि अर्घ ॥ २३ ॥

सर्व आकाश निर्मल बना, मल नहीं कहीं अवशेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व आकाश निर्मलता सहिताय जलादि अर्घ ॥ २४ ॥

षट् ऋतु के फल सब फले, शोभा नहीं अवशेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय षट् ऋतु के फल फूल सहित अतिशयाय जलादि अर्घ ॥ २५ ॥

सर्व भू मण्डल शान्ति बनी, अशान्त नहीं कही अवशेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हैं परमेष ॥ २६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व भू मण्डल शान्ति सहिताय जलादि अर्घ ॥ २६ ॥

चरण युगल नीचे बने, कमल बने जिनेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ॥ २७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय चरण युगल तल कमल अतिशय युक्ताय जलादि अर्घ ॥ २७ ॥

देवनभ जयकार करे, जप तुम जिनेष ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ॥ २८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय आकाश में देव जय जयकार अतिशयाय जलादि अर्घ ॥ २८ ॥

मन्द सुगन्ध वायु चले, जय हो श्री जिनेश ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय मन्द सुगन्ध वायु चलन अतिशय सहिताय जलादि अर्घ ॥ २९ ॥

गन्धोदक की वृष्टि हो, जय जय श्री जिनेश ।
अर्घ बनाकर पूजहूं, वन्दन हे परमेष ॥ ३० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय गन्धोदक वृष्टि अतिशय सहिताय जलादि अर्घ ॥ ३० ॥

आठो द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों लियो ।
भूमि कंटक रहिताय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ३१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय भूमि कंटक रहिताय जलादि अर्घ ॥ ३१ ॥

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सो लियो ।
जन मन आनन्द कार, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ३२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय जन मन आनन्दकारक अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ॥ ३२ ॥

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों भजो ।
धर्म चक्र सहिताय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय धर्म चक्र अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ॥ ३३ ॥

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सो भजो ।
मंगल द्रव्य दिखाय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ३४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अष्ट मंगल द्रव्य अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ॥ ३४ ॥

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों भजो ।
वृक्ष अशोक दिखाय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अशोक वृक्ष अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ॥ ३५ ॥

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों भजो ।
सिंहासन पर जिनराज, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सिंहासन अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ॥ ३६ ॥

आठों द्रव्य सम्हार, उत्तम विधि सों भजो ।
तीन छत्र किराय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय तीन छत्र अतिशय सहिताय जलादि अर्घं ॥ ३७ ॥

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो ।
भामण्डल पिच्छवार, रत्नत्रय निधि भजो ॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय भामण्डल अतिशय सहिताय जलादि अर्घ ॥ ३८ ॥

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो ।
दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ३९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य सहिताय जलादि अर्घ ॥ ३९ ॥

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो ।
सुर पुष्प वृष्ठि प्रातिहार्य, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिक्कुण्ड पार्श्वनाथाय सुर पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य सहिताय जलादि अर्घ ॥ ४० ॥

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो ।
चोषट् चमर ढुराय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिक्कुण्ड पार्श्वनाथाय चौषट् चमर अतिशय प्रातिहार्य सहिताय जलादि अर्घ ॥ ४१ ॥

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो ।
देव दुंदुभि बजाय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ४२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिक्कुण्ड पार्श्वनाथाय देव दुंदुभि प्रातिहार्य सहिताय जलादि अर्घ ॥ ४२ ॥

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो ।
अनन्त ज्ञान धराय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ४३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनन्त ज्ञान अतिशय सहिताय जलादि अर्घ ॥ ४३ ॥

आठों द्रव्य संभार, उत्तम विधि सों भजो ।
अनन्त दर्श धराय, रत्नत्रय निधि को भजो ॥ ४४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनन्त दर्शन अन्तरंग लक्ष्मी सहिताय जलादि अर्घ ॥ ४४ ॥

अनन्त सुख के तुम धारी, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थंकर पूजें, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ४५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनन्त सुख अन्तरंग लक्ष्मी सहिताय जलादि अर्घ ॥ ४५ ॥

अनन्त वीर्य के तूम धारी, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेईसवें तीर्थङ्कर पूजें, करूँ मुक्ती की सेवा ॥ ४६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय अनन्त वीर्य अन्तरंग लक्ष्मी सहिताय जलादि अर्घ ॥ ४६ ॥

आप जन्म रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ४७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय जन्म रोग रहिताय जलादि अर्घ ॥ ४७ ॥

जरा रोग से रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ४८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय जरा रोग रहिताय जलादि अर्घ ॥ ४८ ॥

तृषा रोग से रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय तृषा रोग रहिताय जलादि अर्घ ॥ ४९ ॥

क्षुधा व्याधि से रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ५० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय क्षुधा व्याधि रहिताय जलादि अर्घ ॥ ५० ॥

विश्मय दोष रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ५१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय विश्मय दोष रहिताय जलादि अर्घ ॥ ५१ ॥

सर्व दुःखों से रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनांथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व दुःखों रहिताय जलादि अर्घ ॥ ५२ ॥

सर्व रोग से रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ५३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व रोग रहिताय जलादि अर्घ ॥ ५३ ॥

सर्व शोक से रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ५४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय शोक रहिताय जलादि अर्घं ॥ ५४ ॥

आठ मदों से रहित हो गये, हम लाये परिवारा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, पूजे भक्ति अपारा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, करूँ मुक्ति की सेवा ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्वमद रहिताय जलादि अर्घं ॥ ५५ ॥

सर्व मोह से रहित हो गये, शरण गही जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आये, मैं पूजूं जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय मोहनीय कर्म रहिताय जलादि अर्घं ॥ ५६ ॥

सर्व निद्रा से रहित हो गये, शरण गहीं जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूं जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व निद्रावरण कर्म रहिताय जलादि अर्घं ॥ ५७ ॥

सर्व चिन्ता से मुक्त हो गये, शरण गही जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूं जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व चिन्ता रहिताय जलादि अर्घं ॥ ५८ ॥

सर्वस्वेद से रहित हो गये, शरण गही जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूं जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्वस्वेद (पसीना) रहिताय जलादि अर्घ ॥ ५९ ॥

सर्व पीडा से मुक्त हो गये, शरण गही जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ६० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व पीड़ा रहिताय जलादि अर्घ ॥ ६० ॥

मरण रोग से रहित हो गये, शरण गही जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ६१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय मरण रोग रहिताय जलादि अर्घ ॥ ६१ ॥

राग द्वेष से रहित हो गये, शरण गही जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ६२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय राग द्वेष रहिताय जलादि अर्घ ॥ ६२ ॥

सर्व भय से मुक्त हो गये, शरण गही जिन देवा।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ६३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय सर्व भय रहिताय जलादि अर्घ ॥ ६३ ॥

चौषट् गुण से युक्त हो गये, शरण गही जिन देवा ।
अष्ट द्रव्य ले मन्दिर आया, मैं पूजूँ जिन देवा ॥
पार्श्वनाथ जन जन के ईश्वर, सब देवों के देवा ।
तेइसवें तीर्थङ्कर पूजे, मिले मुक्ति की मेवा ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय छियालीस गुणों से युक्त, अठारह दोष रहिताय जलादि अर्घ निर्वपामिति स्वाहा ॥ ६४ ॥

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

स्तोत्र

(हाथ जोड़कर स्तुति पढ़े)

उपसर्गों को दूर करके, सब कर्मों का नाश करो ।
विषहर हो प्रभु पार्श्व जिनेश्वर, सबका मंगल काम करो ॥

विषहर फुलिंग मंत्र तुम्हारा, कष्ट में धारण करके नर ।
उसके ग्रह रोगदिक मारी, दुष्टादिक जाये क्षण में भग ॥

पार्श्व प्रभु का नाम स्मरण से, फल होता है अति भारी ।
नर तिर्यंचादिक जीव भी पाते, सुख शान्ति है अति भारी ॥

चिन्तामणि सम नाम तुम्हारा, कल्प वृक्ष सम हो भारी ।
नाम मात्र जपने से प्रभुवर, स्थान पाते है अजरामर ॥

भक्ति भाव से इस स्तोत्र का, स्मरण करते भयिक जन ।
उसको मिलता भव भव में है, ज्ञान समृद्धि पास जिनन्द ॥

। इति ।

धरणेन्द्र का अर्घ

नागों के हो नाग स्वामी, धरणेन्द्र तुम्हारा नाम है ।
पाताल में जो भवन शोभे, उसमें तुम्हारा वास है ॥
भक्त जनों की सेवा करते, दु:ख को हरते खास है ।
वसु द्रव्य से मैं अर्घ करता, स्थापना इस स्थान है ॥ १ ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पातालवासी धरणेन्द्र देवाय सपरिवार सहिताय इदम् अर्घ पादं, गन्धं, अक्षतं, पुष्पं, चरु दीपं, धूपं, फलं, अर्घ स्वस्तिकं यज्ञ भागं च यजामहे यजामहे अर्घ समर्पयामि स्वाहा ॥ १ ॥

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

पद्मावती पूजा

पद्मावती सब दु:ख हरणी, तुम जग की जगदम्बा हो ।
भक्त जनों के सब सुख करणी, हे माता जगदम्बा हो ॥
आह्वानन कर स्थापूँ मैं तुमको, आकर तिष्ठो माता यहाँ ।
मैं तुमको ध्याऊँ, दु:ख मिटाऊँ, संकट टालो माता यहाँ ॥ २ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती जगदम्बे माता सपरिवार देवा अत्रागच्छ२

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती जगदम्बे माता सपरिवार देवा अत्रतिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती जगदम्बे माता सपरिवार देया अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सनिधिकरणं ।

गंगाजल का नीर भराऊँ प्रासुक लेकर आया हूं ।
पद्मावती देवी के चरणों, धार दे हर्षाया हूं ॥
पद्मावती देवी की पूजा, मैं करके हर्षाया हूं ।
इसीलिये हे माता तेरे आज, चरणों में आया हूं ॥ ३ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती............................जलं समर्पयामि ॥ जलं ॥ ३ ॥

मलयागिरी का चन्दन घीसकर, शुद्ध सुगन्धित लाया हूं।
पद्मावती देवी के चरणों मैं, अर्पण कर हर्षाया हूं ॥
जगदम्बे देवी की पूजा, मैं करके हर्षाया हूं ।
इसीलिये हे माता तेरे आज, चरणों में आया हूं ॥ ४ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती.....................................चन्दनं समर्पयामि ॥ ४ ॥

अखणु तन्दुल जल से धोकर थाल सजाकर लाया हूं।
पद्मावती देवी के चरणों में, अर्पण कर हर्षाया हूं ॥
जगदम्बे देवी की पूजा, मैं करके हर्षाया हूं ।
इसीलिये हे माता तेरे, आज चरणों में आया हूं ॥ ५ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती.....................................अक्षतं समर्पयामि ॥ ५ ॥

नानाविध के पुष्प मंगाकर, आज यहाँ पर लाया हूं।
पद्मावती देवी के चरणों में, अर्पण कर हर्षाया हूं ॥
जगदम्बे देवी की पूजा, मैं करके हर्षाया हूं ।
इसीलिये हे माता तेरे आज, चरणों में आया हूं ॥ ६ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती.....................................पुष्पं समर्पयामि ॥ ६ ॥

घेवर, पूड़ी और जलेबी, थाली भरकर लाया हूं ।
दिव्य चरु से अचन करके, सुख संपत्ति को पाया हूं ॥
दुःख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
नैवेद्य की पूजा से माता, सुख सभी मिल जाते हैं ॥ ७ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी ....नैवेद्यं समर्पयामि ॥ ७ ॥

घृत का दीपक लेकर माता, तुम चरणों में आया हूं।
दिव्य प्रकाश की इच्छा लेकर, तुम चरणों में आया हूं ॥
दुःख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते है ।
दीपक की ज्योति से माता, सुख सभी मिल जाते हैं ॥ ८ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी ....दीपं समर्पयामि ॥ ८ ॥

धूप दशांगी लेकर माता तव चरणों में आया हूँ ।
सभी प्रकार के कर्मों को मैं आज मिटाने आया हूँ ॥
दु:ख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
धूप दशांगी खेने से माँ, सुख सभी मिल जाते हैं ॥ ९ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी................................ धूपं समर्पयामि ॥ ९ ॥

केला, आम, सुपारी आदि ले, सुवर्ण थाल भर आया हूँ ।
दिव्य मधुर, सुपक्व फलों को लेकर अब मैं आया हूँ ॥
दु:ख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
दिव्य फलों की पूजा से माँ, सुख सभी मिल जाते हैं ॥ १० ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी..................... दिव्य फलं समर्पयामि ॥ १० ॥

जल चन्दनादि वसु द्रव्य सजाकर, तुम ढिंग लेकर आया हूं ।
अष्ट द्रव्य से थाल सजाकर तुम अर्चन को आया हूं ॥
दु:ख संताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
अष्ट द्रव्य के अर्चन से, माँ सुख सभी मिल जाते हैं ॥ ११ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी....................अष्ट द्रव्यं समर्पयामि ॥ ११ ॥

जल सुगन्धित लाय के, पद्मावती चरण चढ़ाय के ।
चरणों में शीश नवाय के, सभी के दु:ख नशाय के ॥ १२ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी.....पाद्यं समर्पयामि । जलधारा छोड़े ॥ १२ ॥

पञ्चामृतादि सद द्रव्यों से, अभिषेक आपका कर दीन्हा ।
आपने माता सब जीवों का, दु:ख दारिद्र हर लीन्हा ॥ १३ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी..............पञ्चामृत द्रव्य समर्पयामि ॥ १३ ॥

मिष्ट मधुर इक्षु दण्ड से आपकी पूजा कर दीन्ही ।
माता आपने आज सभी की इच्छा पूरी कर दीन्ही ॥ १४ ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी...............................इक्षु दण्डार्चनं ॥ १४ ॥

चना फुलाकर लेकर आया, देवी की पूजा को आज ।
इसकी पूजा से मिलता, सुख, शान्ति, धन, समृद्धि आज ॥ १५ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी..........................चरण का अर्चनं ॥ १५ ॥

थाली भरकर पकवानों की तव चरणों में आया आज ।
पकवानों की पूजा से माँ मिटे जगत दुःख सन्ताप ॥ १६ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी...............................पकवानार्चनं ॥ १६ ॥

पास्ता कीसमीस बादामों से थाली भरकर लाया आज ।
नानाविध मेवों से माता मिटे भुख व्याधि संताप ॥ १६ ॥
ॐ ह्रीं ....दिव्यमेवादि अर्चनंकुरू॥ १६ ॥

केला आम नारंगी फलों से थाली भर कर लाया आज ।
नानाविधि के पक्वे फलों से पूजा करता तेरी आज ॥ १६ ॥
ॐ ह्रीं ....केलादाडिमादिफलं समर्पयामि स्वाहा ॥ १६ ॥

नाना विद्य के वस्त्रों को मैं लेकर आया देवी आज ।
वस्त्रों की पूजा से माता, दुःख दारिद्र सभी मिट जाय ॥ १७ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी........................दिव्य वस्त्रा अर्चनं ॥ १७ ॥

केयुर, कुण्डल, हार, मुकुटादि भूषण से करु पूजा आज ।
आभूषण से पूजा करके, पाऊँ धन वैभव को आज ॥ १८ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी.........सुवर्णआभुषनावि षोडसाभरणं अर्चनं ॥ १८ ॥

कुकुम, केशर, गन्धसु लेकर, तिलक लगाता तुमरे भाल ।
दिव्य ज्ञान हो जावे मेरा, मिटे सर्व जगत सन्ताप ॥ १९ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी...................................नीलकार्चनं ॥ १९ ॥

छत्र, चँवर, मंगल, द्रव्यों को लेकर आया माता आज ।
मंगल की मैं कामना करता, होवे जगत में शान्ति आज ॥ २० ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी.....................छत्र चामरादि अर्चनं ॥ २० ॥

शुद्ध सुवर्ण का कलश बनाकर, प्रासुक जल भर के आया ।
सुवर्ण कलश के अर्चन से, माँ सुख शान्ति को हमने पाया ॥ २१ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी..........................सुवर्ण कलशार्चनं ॥ २१ ॥

निर्मल दर्पण लेकर आया, स्वच्छ अति निर्मल देखा भाव ।
दर्पण की निर्मलता कहती, करो सभी मिल निर्मल भाव ॥ २२ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी...दर्पणार्चनं ॥ २२ ॥

वस्त्रादिक की झण्डी लेकर, तव चरणों मे आया आज ।
इसी पूजा से मिटता है, इस जगत के सभी सन्ताप ॥ २३ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी.................................. पताकार्चनं ॥ २३ ॥

नाना विद्य का वाद्य बजाकर, नाचूँ गाऊँ देखो आज ।
तीन प्रदक्षिणा देकर माता, तुमको नमन मैं करूँ ॥ २४ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी वाद्य, नृत्य, गीत, प्रदक्षिणा, नमस्कारं ॥ २४ ॥

वसुविद्य द्रव्यादि को लेकर, करता हूं मैं पूजा आज ।
अष्ट महा निधि को पाने, आया हूं चरणों में आज ॥ २५ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी.............................अर्घ्यं समर्पयामि ॥ २५ ॥
। शान्तिधारा । पुष्पाञ्जलि ।

चौबीस आयुधों के प्रत्येक अर्घ्य ।
द्वितीय कोष्टोपरी अर्घ चढ़ावे ।
प्रथम पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें ।

प्रथम हाथ में खड्ग जु शोभे, माता तेरे देखो हाथ ।
दुष्टों का निवारण करके, शान्ति देती देखो मात ॥ १ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रथम हाथ में खड्ग शोभित पद्मावती देवी को अर्घ ॥ १ ॥

कान्डायुद्ध की धारण करके, शौभित होती माता आज ।
दूजे हाथ की शोभा इससे, मेटो जगत के सभी सन्ताप ॥ २ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं दूजे हाथ में कांडा युद्ध धारिणी हे पद्मावती अर्घ समर्पयामि ॥ २ ॥

तीजे हाथ में मूसल धारकर धर्म की सेवा करती हो ।
मूसल धारिणी कहलाती, जग को शान्ति करती हो ॥ ३ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे मूसल धारिणी पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ ३ ॥

चौथे हाथ में हल जो शोभे, हलायुधि कहलाती हो ।
हे जगदम्बे देवी तुमतो, सबकी व्याधा हरती हो ॥ ४ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे हलायुद्ध धारिणी पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ ४ ॥

सर्पायुद्ध को कर में लेकर, दुष्ट बंधन का काम करो ।
हे पद्मावती देवी तुमतो, दुर्जन जन का मान-हरो ॥ ५ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे सर्पायुद्ध धारिणी पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ ५ ॥

वन्हि के आयुद्ध को धारो, हे जगदम्बे माता तुम ।
षष्टम हाथ का आयुध जानो, नाश करो पापों को तुम ॥ ६ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वन्हि आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ ६ ॥

चक्रायुद्ध को धारकर, करे दुष्ट संहार ।
सप्तम हो आयुधपति, करो धर्म प्रचार ॥ ७ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं चक्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ ७ ॥

शक्ति शस्त्र हे महिमा वान, तुम हो अष्टम आयुधवान ।
दुष्ट देख सब दिश भग जाय, ऐसी तुम हो महिमावान ॥ ८ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं शक्ति आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यैं अर्घ समर्पयामि ॥ ८ ॥

तारा युधकर धारकर, करे प्रकाश महान ।
इस आयुध का काम है, मिटे दुःख सन्ताप ॥ ९ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं शक्ति आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ ९ ॥

रत्नत्रय का चिन्ह है, त्रिशुल आयुध जान ।
दशम हाथ का शस्त्र है, करे कर्म संहार ॥ १० ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं त्रिशुल आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १० ॥

खपर हाथों धारकर, ग्यारम आयुध धार ।
भिक्षा माँगे प्रेम की, प्रेम की ज्योती जलाये ॥ ११ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं खपर आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ ११ ॥

पद्मावती जगत्पूज्य, करो विश्व कल्याण ।
डमरु आयुध धारकर, करो धर्म प्रचार ॥ १२ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं डमरु आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १२ ॥

नाश पाश को धारकर, नाग रूप बन जाय ।
यह बन्धन अति विकट है, बन्धन छूटे नाय ॥ १३ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं नागपाश धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १३ ॥

डण्डा को ले हाथ में, शोभे अति महान ।
दुष्ट जन दण्डित करे, हरे सभी का मान ॥ १४ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं डण्डायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १४ ॥

पाषाण को ले हाथ में, शोभे अति महान ।
दुष्टों के सिर पर पड़े, हरे सभी का मान ॥ १५ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं पाषाण आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १५ ॥

मुद्गर को ले हाथ में, करें दुष्ट संहार ।
अज्ञानी भागे फिरे, हरे सभी का मान ॥ १६ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं मुद्गर आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १६ ॥

फरसा को ले हाथ में, करें दुष्ट संहार ।
दुष्ठ जन भागे फिरे, हरो सभी का मान ॥ १७ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं फरसा आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १७ ॥

कमलायुध से सहित हो, कोमल कमल महान् ।
इस आयुध का काम है, शोभा करे महान् ॥ १८ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं कमलायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १८ ॥

अंकुश आयुध धारकर, अंकुश में ले आज ।
जग जीवों का हित करे, करे जीव उद्धार ॥ १९ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं अंकुश आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ १९ ॥

आम्रयुध को धारकर छाया सम बन जाय ।
शीतलता प्रदान करे, मिटे जगत सन्ताप ॥ २० ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं आम्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ २० ॥

छत्रायुध को धारकर छत्रपति कहाय ।
छत्र सम शोभे अति, एक छत्र हो जाय ॥ २१ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं छत्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ २१ ॥

वज्रायुध को धारकर वज्रसम बन जाय ।
इस आयुध का काम है, दुर्जन करे संहार ॥ २२ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वज्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ २२ ॥

वृक्षांयुध से होत हैं शीतलता महान ।
जग के जीवों को मिले सुख शान्ति महान् ॥ २३ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वृक्षायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ २३ ॥

जीवों को वरदान दे, वरद आयुध जान ।
माला भी कर में फिरे, करे जीव कल्याण ॥ २४ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरदमाला युद्ध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि ॥ २४ ॥

चोबीस भुजा जगदम्बि के, करो जगत् कल्याण ।
अपने हित के कारणे, कीन्ही पूजा आज ॥ २५ ॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं चौबीस भुजा में स्थित चतुर्विंशति आयुध सहित हे पद्मावती देव्यै पूर्णार्घ्य समर्पयामि ॥ २५ ॥

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

कलिकुण्ड यंत्र प्राण प्रतिष्ठा

मन्त्र

ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओ औ अं अः ह्रीं क्रौं भ्म्ल्व्र्यूं नमः परमात्मने हं सः क ख ग घ ङ तत्पुरुषाय अधोराय ह्रूं र्म्ल्व्र्यूं अग्निदेवतायाः प्राणाः ट ढ ड ढ ण जाततत्पुरुषाय ह्रूं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्थलदेवतायाः प्राणः ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूं ज़ल देवतायाः प्राणाः ॐ य र ल व श ष स ह अनन्तकेवलिने ह्रैं घ्म्ल्व्र्यूं सर्वदेवतायाः प्राणाः ॐ नमः सर्वविद्याधिपतये ह्रां र्म्ल्व्र्यूं सर्व जीव इह स्थित यंत्र तंत्र मंत्र पंत्राग्रेषु यंत्र रुप स्तथा तिष्ठ २ ठः ठः मम् यंत्र मंत्र तंत्राणां काय वाङ् मनश्चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसना स्पर्शनेंद्रियाणि रुचितांगानि तिष्ठन्तु ऐं क्षीं ॐ नमः स्वाहा ।

इस मन्त्र को सात बार पढ़कर यंत्र पर पुष्प क्षेपण करें ।

यंत्र पूजा

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
आह्वानन स्थापन करूँ, तीष्ठा यहाँ पर आय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्डयन्त्राय अत्र आगच्छ२ । अत्र तिष्ठ२ ठः ठः । अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
जल से मैं अर्चा करूँ मन में बहु हर्षाय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ....जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा ॥ २ ॥

कलिकुण्ड श्री यंत्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
चन्दन से अर्चा करूँ, मन में बहु हर्षाय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं............................चन्दनं निर्वपामिति ॥ ३ ॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
अक्षत् से अर्चा करूँ मन में बहु हर्षाय ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं......................अक्षतं निर्वपामिति ॥ ४ ॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
पुष्पों से अर्चा करूँ, मन में बहु हर्षाय ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं..........................पुष्पं निर्वपामिति ॥ ५ ॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
नैवेद्य से पूजा करूँ, मन से बहु हर्षाय ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं..........................नैवेद्यं निर्वपामिति ॥ ६ ॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
दीपों से पूजा करूँ, मन में बहु हर्षाय ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं...............................दीपं निर्वपामिति ॥ ७ ॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
धूपों से पूजा करूँ, मन में बहु हर्षाय ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं...................................धूपं निर्वपामिति ॥ ८ ॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
फलों से पूजा करूँ, मन में बहु हर्षाय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं.......................................फलं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ९ ॥

कलिकुण्ड श्री यन्त्र की पूजा करूँ हर्षाय ।
अर्घ चढ़ाकर पूजहूं, मन में बहु हर्षाय ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं.......................................अर्घ निर्वपामिति ॥ १० ॥

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

पींडाक्षर पूजा

बगीया से पुष्पों को लाया, ताजा ताजा चुनकर ।
पुष्पाञ्जलि मैं करने आया, मन में हर्षित होकर ॥ १ ॥
तृतीय । कोष्टोपरी पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

हपींडाधीश्वर की पूजा मन में कर हर्षाऊँ ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं हम्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र आं क्रों हपिंडाघिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधीश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय, मम् अभिमत सुखं पूरय पूरय हपिंडाधिष्ठिताय जलावि अर्घ ॥ २ ॥

भपींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊँ ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः आं क्रों भं पिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय, मम् अभिमत सुखं पूरय पूरय भपिंडाघिष्ठिताय जलावि अर्घ ॥ ३ ॥

मंपींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊँ ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं म्म्ल्व्र्यूं म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः आं क्रौं मपिंडाधिठिष्त कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय, मम् अभिमत सुखं पूरय पूरय मंपिण्डाधिष्ठिताय जलावि अर्घ ॥ ४ ॥

रंपींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊँ ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं र्म्ल्व्र्यूं रां रीं रूं रौं रः रं आं क्रों रं पिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय, मम् अभिमत सुखम् पूरय पूरय रंपिडाधिष्ठिताय जलावि अर्घ ॥ ५ ॥

घं पींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊँ ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं हम्ल्व्र्यूं घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः आं क्रों घं पिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय, मम् अभिमत सुखम् पूरय पूरय घंपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घ ॥ ६ ॥

झंपिंडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊँ ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्यूं झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः आं क्रों झं पिंडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय, मम् अभिमत सुखं पूरय पूरय झंपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घ ॥ ७ ॥

संपींडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊँ ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं स्रां स्रीं स्रूं स्रौं स्रः आं क्रों संपिडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनयं, मम् अभिमत सुखम् पूरय पूरय संपिंडाधिष्ठिताय जलादि अर्घ ॥ ८ ॥

खंपिंडाधीश्वर की पूजा, मन में कर हर्षाऊं ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्र्यूं खां खीं खूं खौं खः आं क्रों खंपिडाधिष्ठित कलिकुण्ड दण्डाधिश्वर अतुल बल वीर्य पराक्रम चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्गान् अपनय अपनय, मम् अभिमत सुखम् पूरय पूरय खंपिडाधिष्ठिताय जलादि अर्घ ॥ ९ ॥

अष्ट पींडाक्षर की पूजा, मन में कर हर्षाऊं ।
श्री जिनदेव का नाम स्मरणकर, सुख शान्ति मैं पाऊँ ॥ १० ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हपिंडादि खपिंडात्यष्ट पिंडाक्षरे भ्यो पूर्ण अर्घ निर्वपामिति स्वाहा ॥ १० ॥

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

चतुर्थ कोष्टोपरी अष्ट मातृ की पूजा

ब्राह्मी, माहेश्वरी तथा कौमारी वैष्णवी भी हैं ।
वाराही, महेन्द्राणी चामुण्डा, श्री लक्ष्मी भी मातृका है ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अष्ट मातृ का प्रत्येक पूजा प्रपिज्ञापनाय पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥ १ ॥
मण्डल पर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करे ।

पद्मप्रभा को धारण करती, पद्म का वाहन है तेरा ।
मूसल का आयुध धारण करती, ब्रह्माणी है नाम तेरा ॥
अष्ट द्रव्य को लेकर आये, माता लेते नाम तेरा ।
सर्वविध्न की शान्ति करणे, सुख पाते ले नाम तेरा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पद्मरागवर्णे मूसलायुध धारिणी पद्मवाहने सचिन्ह परिवारे हे ब्राह्मणी देवी जलादि अर्घ समर्पयामि ॥ २ ॥

भिंदिपाल का आयुध सोहे, शाकवर वाहन हे माता ।
श्वेतवर्ण की प्रभा हे तेरी, नाम माहेश्वरी हे माता ॥
अष्ट द्रव्य को लेकर आये, पूजा करने हे माता ।
दुष्ट रोग की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे भिंदिपालायुंधे शाक्वर वाहने सचिन्ह परिवारे हे माहेश्वरी देवी जलादि अर्घ समर्पयामि ॥ ३ ॥

खड्गायुध को धारण करके, विद्रुम वर्ण का तन सोहे ।
मयूर वाहन को धारण करके, नाम कौमारी तुम सोहे ॥
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता ।
क्रूर विध्नों की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं विद्रूमवर्णे खड्गायुधेशिखि वाहने सचिन्ह परिवारे हे कौमारि देवी जलादि अर्घ समर्पयामि ॥ ४ ॥

नीलप्रभा को धारण करके, चक्र का आयुध हे माना ।
गरूड वाहन को धारण करके, वेष्णावी देवी हे माता ॥
अष्ट द्रव्य को लेकर आता, पूजा करने हे माता ।
ग्रह विध्नों की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चकनिल प्रभे (इन्द्रनील वर्णे) सर्वलक्षण संपूर्णे चक्रायुधे, गरूड वाहने हे वेष्णावी देवी जलादि अर्घ ॥ ५ ॥

वराहका वाहन पर बेठी, हल का आयुध धारण करो ।
नीलवर्ण की आभा सोहे, नाम वाराही हे माता ॥
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता ।
सर्व रोग की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं नीलवर्णे वराहवाहने हलायुधे सचिन्ह परिवारे हे वाराहि देवी जलादि अर्घ ॥ ६ ॥

सुवर्ण वर्ण को धारण करके, वज्र का आयुध से सोहे ।
हस्ति वाहन पर आरुढ़ होकर, नाम इन्द्राणी से सोहे ॥
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता ।
रूद्र भाव की शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सुवर्ण वर्णे वज्रायुधे गजाधिवाहने हे इन्द्राणी देवी जलादि अर्घ ॥ ७ ॥

अरुण वर्ण को धारण करके, व्याघ्र वाहन पर सोहे ।
शक्ति शस्त्र को धारण करके, चामुण्डा हे नाम सोहे ॥
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता ।
सर्व उपद्रव शान्ति करणे, आये शरण तेरी माता ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं अरुण वर्णे व्याघ्रवाहने चक्रायुध धारणे हे चामुण्डा देवी जलादि अर्घ ॥ ८ ॥

श्वेतवर्ण को धारण करके, मूषक वाहन पर सोहे ।
गदायुध को धारण करके, नाम लक्ष्मी हे सोहे ॥
अष्ट द्रव्य को लेकर आया, पूजा करने हे माता ।
सर्वरक्षा को करणे आये, शरण तेरी माता ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे व्याघ्र वाहने चक्रायुधे चामुण्डा देवी जलादि अर्घ ॥ ९ ॥

अत्यन्त भक्ति सहित हो, आवो जिनवर पास ।
अष्ट मातृ का पूजहूं, करो विघ्न सब शान्त ॥ १० ॥
ॐ आं क्रों ह्रीं अष्ट मातृका देवी समूहेभ्यो पूर्ण अर्घ ॥ १० ॥
शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

पंचम कोष्टोपरी अष्ट जयाद्य देवता पूजा

हाथों में ले पुष्प को आया तेरे पास ।
पुष्पाञ्जलि मैं करत हूं, शान्ति दे दो मात ॥
मण्डलोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मँगाऊं ।
जया देवी माताजी को, मन में अर्घ चढ़ाऊँ ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं आं क्रों जयादेविभ्यो जलादि अर्घ समर्पयामि ॥ १ ॥

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
विजया देवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं आं क्रों विजयादेविभ्यो जलादि अर्घ ॥ २ ॥

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
अजिता देवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं आं क्रों अजितादेविभ्यो जलादि अर्घ ॥ ३ ॥

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
अपराजीता देवी को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं आं क्रों अपराजीतादेविभ्यो जलादि अर्घ ॥ ४ ॥

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
जंभा देवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं आं क्रों जंभादेविभ्यो जलादि अर्घ ॥ ५ ॥

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
मोहादेवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं आं क्रों मोहादेविभ्यो जलादि अर्घ ॥ ६ ॥

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
स्तंभा देवी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं आं क्रों स्तंभादेविभ्यो जलादि अर्घ ॥ ७ ॥

नीर सु चन्दन धवल सु अक्षत अष्ट द्रव्य मंगाऊँ ।
स्तंभिनी माता को मैं, मन से अर्घ चढ़ाऊँ ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं आं क्रों स्तंभिनीदेविभ्यो जलादि अर्घ ॥ ८ ॥

जयादि अष्ट देवियों का अर्घ चढ़ाऊँ आज ।
सर्व विघ्नों की शान्ति हो, धर्म का फल मिल जाय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं आं क्रों जयादि अष्ट देव्येभ्यो जलादि अर्घ ॥ ९ ॥

शान्ति धारा पुष्पाञ्जलि ।

जाप्य मन्त्र

१०८ लोंगों से ।

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा ।

॥ जयमाला ॥

सुसिद्ध विबुद्ध विबोध विधान, विकसित विश्व विवेक विधान ।
विडंबित काम जगज्जय चंड सदा सदयो दय जय कलिकुण्ड ॥ १ ॥

पयोधि पयोधर धीर निनाद, निराकृत दुर्मत दुर्मद वाद ।
असत्य पथैक पतता विदण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥ २ ॥

निराकुल निर्मल शील गिरीश, निराश निरंजन जिनवर शिंह ।
विपाटित दुष्ट मद द्विप गंड सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥ ३ ॥

कषाय चतुष्टय काष्ट कुठार, निरामय नित्य नरा नर सार ।
विदीर्ण घना घन विध्न करंड, सदा सदयोदर जय कलिकुण्ड ॥ ४ ॥

अनल्प विकल्प विलीन विकल्प विशल्य विशूल विसर्प विदर्प ।
विरोग विभोग विखंड विमूंड सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥ ५ ॥

कणीश नरेश सुरेश महेश दिनेश शुभेष गणेश गुणेश ।
चिदर्क विकासित शतदल तुंड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥ ६ ॥

विशोक विशंक विमुक्त कलंक विकसित विश्व विदूरित पंक ।
कला कल केवल चिन्मय पिंड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥ ७ ॥

विखंडित मोह मही रुह कंद, वर प्रद सत्पद मंडल दण्ड ।
त्रिदंड विखण्डित माय सखण्ड, सदा सदयोदय जय कलिकुण्ड ॥ ८ ॥

दोहा

कलिकुण्ड जलमालिका अर्घ चढ़ाओ आज ।
सुख शान्ति की प्राप्ति हो, मोक्षपुरी मिल जाय ॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कलिकुण्ड दण्ड यंत्राय जयमाला पूर्ण अर्घ ॥

शान्ति धारा, पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् । फिर विसर्जन करदे ॥ इति ॥

अणिन्दा ग्राम एक क्षेत्र है अतिशय पार्श्वनाथ ।
कलिकुण्ड विधान लिखा, चरण बैठ भगवान ॥

भविक जन पूजा करो, सर्व विघ्न पलाय ।
सुख शान्ति सभी मिले, आनन्द हो जाय ॥

पद्मनन्दी आचार्य का, देखा विधान यह सार ।
उसही को देख लिखा, उसही के अनुसार ॥

कुन्थुसागर आचार्य ने, लिखा विधान यह जान ।
आग्रह था क्षेमा बेटी का, पूजा बनी महान् ॥

भूल चूक सब माफ हो, मैं अज्ञानी जान ।
छोटा मुँह बड़ी [illegible] हैं, भक्ति मात्र हे जान ॥

॥ इति ॥

॥ समाप्तम् ॥

श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथाय नमः

कलिकुण्ड आराधना की सामग्री
(यह सामग्री १ जोड़ा के हिसाब से)

१) नारियल १४१
2) बदाम २०० ग्राम
३) चावल ३ किलो
४) सुपारी २०० ग्राम
५) चारोली २०० ग्राम
६) काजु २०० ग्राम
७) कासमीस २०० ग्राम
८) लवंग २०० ग्राम
९) अष्ट गंध २०० ग्राम
१०) घी १ किलो
११) पीली सरसो २०० ग्राम
१२) चंदन चुरा २०० ग्राम
१३) दशांगधुप ०॥ किलो
१४) बुरा साकर ५० ग्राम
१५) खोपरा चुरा ५० ग्राम
१६) खोपरा वाटी ॥ वाटी
१७) सफेद तील २०० ग्राम
१८) हलदी पीसी २०० ग्राम
१९) कुंकु २०० ग्राम
२०) खाने का कलर ५ कलर
(लाल, हरा, नीला, पीला, गुलाबी)
२१) दुध १ लीटर
२२) चावल के धान २०० ग्राम
२३) काली माटी १ किलो
२४) काली मीरच ५० ग्राम
२५) सौंठ ५० ग्राम
२६) धाना ५० ग्राम
२७) जीरा ५० ग्राम
२८) सप्त धान (उड़द, मुँग,
ज्वार, चना, तूर)
सब मिक्स ०॥ किलो
२९) केला २ डझन
३०) लींबू १ पीस
३१) फल (मिक्स फल) १ डझन
३२) हलदी गांठ ११ पीस
३३) जनोई ५ जनोई
३४) नाला छडी पंचरंगी 2 गांठ
३५) दर्पण पांच पीस
३६) सवा रुपया पांच पीस
३७) गुलाब फूल ३१ पीस
३८) फूल माला २ लड़ी
३९) गजरा ७ पीस
४०) पान ३१ पीस
४१) मिठाई १ किलो
४२) दीपक माटी का ११ पीस
४३) अखंड दीपक १ पीस
४४) धर्मचक्री १ पीस
४५) घंरडी ७ पीस
४६) चमर ४ पीस
४७) चंदन हार ५ पीस
४८) मुगट ५ पीस
४९) कलश तांबे का ५ पीस